Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2508S01V13P009

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Aug'25
Issue–VIII(I), Volume–XIII

# भारतीय ज्ञान प्रणाली में आर्थिक न्याय की अवधारणा-- डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं चाणक्य नीति के विशेष सन्दर्भ में

***सीमा आर्य**
एच. एन. बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
****प्रो. सीमा धवन**
एच. एन. बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

**सारांश**

भारतीय इतिहास में चाणक्य एक महान अर्थशास्त्री थे जिन्होंने भारत में मौर्य साम्राज्य की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चाणक्य द्वारा रचित चाणक्य नीति एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं, जिसमें मानवीय जीवन जीने के राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, एवं व्यक्तिगत जीवन से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया हैं। चाणक्य के अनुसार राजा को जनता से उसी प्रकार कर लेना चाहिए जिस प्रकार सूरज पृथ्वी से जलवाष्प लेकर वर्षा करता हैं। चाणक्य की नीतियों को अपनाने से जीवन में वित्तीय सफलता हासिल हो सकती हैं। ज्ञान के प्रतीक डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भी दृष्टिकोण बहुआयामी था। उन्होंने भी मानवीय विकास एवं समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लाने के लिए राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, क्षेत्रों में विभिन्न कार्य किए। वह एक उच्च कोटि के अर्थशास्त्री थे। वह समाज में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक असमानता को समाप्त करके समाज के प्रत्येक वर्ग को सामाजिक और आर्थिक न्याय दिलाना चाहते थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का दृष्टिकोण सभी पहलुओं पर समावेशी एवं न्यायसंगत था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर और चाणक्य ने अपने समय में आर्थिकी से सम्बंधित कई समस्याओं और उनके निवारण के लिए महत्वपूर्ण नीतियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। जिनकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी हैं। प्रस्तुत शोध कार्य गुणात्मक विधि पर आधारित हैं, जिसमें डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया हैं। शिक्षक प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण के आकलन हेतु स्व-निर्मित उपकरण का निर्माण किया गया हैं, जिसमें डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों से सम्बंधित प्रश्नावली का प्रयोग करके शिक्षक प्रशिक्षुओं के स्वं आकलन को प्रस्तुत किया गया हैं तथा परिणाम का चाणक्य नीतियों के अनुसार समीक्षा की गई हैं।

**मुख्य शब्द–** डॉ. भीमराव अम्बेडकर, चाणक्य नीति, आर्थिक विचार, मानवीय विकास, सकारात्मक परिवर्तन, भारतीय ज्ञान प्रणाली, अर्थशास्त्री।

**प्रस्तावना**

प्राचीन समय से चली आ रही भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय शिक्षा की पद्धति हैं। वर्तमान परिदृश्य में प्राचीन ज्ञान का समग्र दृष्टिकोण पर आधारित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ऐसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने का प्रयास किया जा रहा हैं, जिसके अन्तर्गत विभिन्न धार्मिक ग्रथों, दर्शन योग, कला संस्कृति आदि के समन्वय पर प्रकाश डाला गया हैं। प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था राज्य की नीतियों एवं कृषि, व्यापार, शिल्प पर आधारित थी। वैदिक युग की अर्थव्यवस्था भी कृषि, पशुपालन वस्तु विनिमय पर आधारित थी। "मनुस्मृति एवं अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था से जुड़े कई नियमों एवं सिद्धांत का उल्लेख मिलता हैं।" (ज्ञानकोष) प्राचीन भारतीय विचारक चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य एवं विष्णुगुप्त भी कहा जाता हैं भारत में मौर्य साम्राज्य की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, चन्द्र गुप्त मौर्य के साम्राज्य के महामंत्री थे। चाणक्य ने संस्कृत भाषा में प्रसिद्ध ग्रन्थ अर्थशास्त्र लिखा हैं, उनके द्वारा रचित "चाणक्य नीति" एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं, जिसमें 17 अध्याय और 455 नीति सूत्र हैं, जिसमें, संस्कृति, कूटनीति नेतृत्व, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं व्यक्तिगत

जीवन से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं को सूत्रात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया हैं। चाणक्य द्वारा प्रतिपादित आर्थिक नियमों, सिद्धांतों एवं तर्कों के समावेशन का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया हैं। चाणक्य नीति मानवीय जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए व्यक्ति का मार्गदर्शन करती हैं। चाणक्य ने तत्कालीन राज्य के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्होंने जिन आर्थिक विचारों का प्रतिपादन किया वर्तमान परिपेक्ष्य में आज भी उनकी प्रासंगिकता और महत्व है (जैन 2020)। चाणक्य की "चाणक्य नीति" को नीतिशास्त्र भी कहा जाता हैं, उन्होंने धन अर्जन की महत्ता को अपनी सूक्तियों के माध्यम से स्पष्ट किया है| धनमूलं संसार धन के अभाव में कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता| सम्पूर्ण संसार की गतिविधियाँ धन पर निर्भर करती हैं| अर्थस्य पुरूषों दास-- धन का मानव जीवन में बहुत महत्व है, धन का अभाव में व्यक्ति दास बन जाता हैं अर्थात उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है|

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारत में आधुनिकता की नीवं रखी, वे पुरातन विचारों के प्रबल विरोधी थे| उनका मानना था कि भारतीय समाज में सभी मनुष्य समान हैं और वो ज्ञान के उत्कृष्ट स्तर तक पहुँच सकता हैं, जिसमें तार्किक ज्ञान और अध्यात्मिक चिंतन का संतुलन हो | डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण, तर्क एवं वैज्ञानिकता पर आधारित था, वह बुद्ध की समानता की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित थे, इसीलिए उन्होंने 1956 में बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया था क्योंकि बौद्ध धर्म तर्क, नैतिकता एवं मानवतावाद पर आधारित था| डॉ. अम्बेडकर के विचार तीन सिद्धांतों पर समाहित थे समानता स्वतंत्रता एवं बंधुत्व। उनका मानना था कि भारतीय शिक्षा में भी न्याय, समानता, स्वतंत्रता को स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि भारतीय शिक्षा प्रणाली असमानता एवं सामाजिक विभाजन पर केन्द्रित हैं, जिसमें निम्न वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा गया हैं| डॉ० भीम राव अम्बेडकर मानवीय जीवन में किसी भी प्रकार की विषमता को समाप्त करना चाहते थे, तथा आर्थिक संसाधनों में सम्पूर्ण समाज की बराबर भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते थे| डॉ. अम्बेडकर आर्थिक क्षेत्र में भविष्य के वक्ता थे, क्योंकि उन्होंने जो आर्थिक सिद्धांत दिए हैं वो आज भी प्रासंगिक हैं| वह एक उच्च कोटि के अर्थशास्त्री थे (कुमार और मौर्य 2019) तथा उनका अर्थशास्त्र प्रिय विषय था| उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की थी। प्रसिद्ध अर्थशास्त्र अमर्त्य सेन ने कहा था कि "अर्थशास्त्र में डॉ. भीमराव अम्बेडकर मेरे पिता हैं"| उन्होंने अर्थशास्त्र से सम्बंधित तीन पुस्तकें लिखी The Problem of the Rupee: Its Origin and Solution(1923), Administration and Finance of the East India Company (1915), और The Evolution of Provincial Finance in British India (1917) | डॉ. अम्बेडकर के अर्थशास्त्री के रूप में विचार और किए गए कार्यों से सभी को परिचित होना आवश्यक हैं, उन्हें लोग सिर्फ संविधान निर्माता के एवं समाज सुधारक रूप में जानते हैं, परन्तु वह एक प्रखर अर्थशास्त्री भी थे (कश्यप 2016) |

**शोध के उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली में आर्थिक न्याय की अवधारणा का डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों के सन्दर्भ में शिक्षक प्रशिक्षुओं के विचारों का अध्ययन करना हैं, एवं परिणामों का चाणक्य नीतियों के अनुसार समीक्षा करना हैं ।

**शोध विधि**

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया हैं | जनसंख्या के रूप में हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षुओं को सम्मिलित किया गया है| न्यादर्श हेतु शिक्षक प्रशिक्षुओं का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया हैं| आकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित अर्द्धसंरचित साक्षात्कार प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों की प्रांसगिकता को जानने हेतु प्रश्नों को सम्मिलित किया गया, एवं प्राप्त उत्तरों का विषयगत विश्लेषण किया गया हैं| विषयगत विश्लेषण के

आधार पर शिक्षक प्रशिक्षुओं के विचारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया हैं एवं प्राप्त परिणामों की चाणक्य नीति के अनुसार समीक्षा की गई हैं|

**परिणाम और परिचर्चा**

**शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं से डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों का विवरण**

| प्रारम्भिक कथन | कथन | उप कथन |
|---|---|---|
| **डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचार** | उत्तम रोजगार को बढ़ाना | ➢ आर्थिक विकास<br>➢ आर्थिक असमानता को कम करना |
| | भूमि सुधार<br><br>औद्योगीकरण एवं विकास | ➢ सामूहिक खेती<br>➢ कृषि का राष्ट्रीयकरण<br>➢ बेरोजगारी का समाधान<br>➢ गरीबी उन्मूलन |
| | महिलाओं का आर्थिक उत्थान | ➢ समान कार्य के लिए समान वेतन<br>➢ हिन्दू कोड बिल |
| | कर नीति | ➢ सरकार के राजस्व में वृद्धि<br>➢ व्यवसायों पर कर आर्थिक क्षमता के अनुसार कर |
| | श्रमिकों का उत्थान एवं कल्याण | ➢ स्वरोजगार को प्रोत्साहन<br>➢ अवकाश सम्बन्धी लाभ<br>➢ उपयुक्त सुविधाएँ प्रदान करना |

शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों, कार्यों में उत्तम रोजगार को बढ़ाने के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं| जिसके अन्तर्गत उन्होंने देश के आर्थिक विकास, एवं आर्थिक असमानता को समाज से कम करने में अपनी प्राथमिकता दी है| शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा भूमि सुधार, अन्तर्गत सामूहिक खेती एवं कृषि का राष्ट्रीयकरण, पर अपनी राय दी है| औद्योगीकरण एवं विकास कार्यों के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा बेरोजगारी का समाधान, गरीबी उन्मूलन, के क्षेत्र में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं| महिलाओं का आर्थिक उत्थान एवं सशक्तिकरण के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा समान कार्य के लिए समान वेतन, हिन्दू कोड बिल, में अपनी प्राथमिकता दी हैं| शिक्षक प्रशिक्षुओं ने कर नीति के अन्तर्गत सरकार के राजस्व में वृद्धि, व्यवसायों पर कर, आर्थिक क्षमता के अनुसार कर, पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं| श्रमिकों का उत्थान एवं कल्याण के अन्तर्गत रोजगार को प्रोत्साहन, अवकाश सम्बन्धी लाभ उपयुक्त सुविधाएँ प्रदान करना को प्राथमिकता दी गयी हैं|

**परिचर्चा**

शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं के अवलोकन से ज्ञात होता है कि डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि भारत एक कृषि प्रधान देश हैं, जिसकी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है| वह कृषि भूमि के राष्ट्रीयकरण के पक्षधर थे, वह मानते थे कि भूमि पर सरकार का अधिकार होना चाहिए और सरकार द्वारा समानता और निष्पक्षता से भूमि का समान रूप से कृषकों में वितरण किया जाना चाहिए| उनका मानना था कि भारतीय कृषि व्यवस्था में कई समस्याएँ विद्यमान हैं, जैसे छोटी जोतो की समस्या, भूमि के असमान वितरण, भूमि पर सामंत लोगों का अधिकार

एवं अधिकांश आबादी का कृषि कार्य पर निर्भर होना, डॉ. अम्बेडकर ने कृषि से सम्बंधित समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक खेती की वकालत की| उन्होंने बिखरे हुए खेतों एवं छोटी जोतो की समस्या के समाधान के लिए चकबंदी एवं सहकारी कृषि का समर्थन किया| सामूहिक खेती से उत्पादकता में वृद्धि होगी, जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, गरीबी कम होगी एवं किसान आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त होगे | उन्होंने अपनी पुस्तक Small Holdings in India and their Remedies (1918) में उन्होंने कृषि की समस्याओं पर चर्चा की है | डॉ. अम्बेडकर ने आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण को भी प्राथमिकता दी, उनका विचार था कि केवल कृषि पर निर्भरता से हम आर्थिक विकास नहीं कर सकते, हमें औद्योगीकरण द्वारा रोजगार का सृजन करना चाहिए एवं औद्योगीकरण के माध्यम से देश का आर्थिक विकास संभव होगा एवं भारतीय समाज से जाति आधारित व्यवसायिक वर्गीकरण को समाप्त करके सभी को रोजगार के अवसर प्राप्त होगे और समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता को कम किया जा सकता हैं, क्योंकि आर्थिक असमानता ही समाज में सामाजिक असमानता को उत्पन्न करती हैं| उन्होंने अपनी Problem of Small Industries in India (1947) पुस्तक में लघु उद्योगों के विकास के सम्मुख आने वाली चुनौतियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं|

महिलाओं का आर्थिक उत्थान एवं उनके सशक्तिकरण के लिए उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दू कोड बिल प्रस्तावित किया, जिसमें महिलाओं को पैतृक सम्पत्ति में पुरुषों के बराबर का अधिकार देने का प्रस्ताव रखा गया| हिन्दू कोड बिल लैंगिक समानता एवं सामाजिक समानता लाने की दिशा में मिल का पत्थर साबित हुआ| उन्होंने समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान किया, जिससे किसी भी व्यवसायिक संस्था में महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन मिले डॉ. भीम राव अम्बेडकर का विचार था कि "महिलाओं के आर्थिक विकास के बिना देश का आर्थिक विकास होना संभव नहीं हैं"| शिक्षक प्रशिक्षुओं ने डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचारों के अन्तर्गत कर नीति के प्रति भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं| 1936 में डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने स्वतंत्र मजदूर पार्टी की घोषणा की जिसमें उन्होंने कराधान नीति के अन्तर्गत ऐसे कर नीति के समर्थक थे जिसका प्रभाव आर्थिक रूप से कमजोर एवं गरीब लोगों के आर्थिक स्तर पर नहीं पड़ना चाहिए| उनका मानना था कि लोगों की आर्थिक स्थिति एवं क्षमता के अनुसार कर लगाया जाना चाहिए इसके लिए उन्होंने एक शब्द दिया "कराधान क्षमता" उनके विचार में कृषि भूमि कर, भूमि पर लगने वाला कर लचीला होना चाहिए जिससे कृषकों के आर्थिक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए और उनका जीवन स्तर सकारात्मक रूप से उच्च बना रहे| डॉ. अम्बेडकर ने दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुण्ड नदी परियोजना, सोन नदी परियोजना का निर्माण किया जिससे कृषकों को कृषि एवं सिचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में जल और बिजली की उपलब्धता प्राप्त हो सके|

शिक्षक प्रशिक्षुओं ने डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचारों के अन्तर्गत श्रमिकों का उत्थान एवं कल्याण में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं कि डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने श्रमिकों की समस्याओं एवं निराकरण के लिए श्रमिक संघ का गठन किया| वह उनके अधिकारों एवं आर्थिक कल्याण के समर्थक थे, उन्होंने उनके कल्याण हेतु कार्य के 8 घटें कार्य की व्यवस्था की एवं श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की जिससे उनका शोषण न हो सकें| महिला श्रमिकों के लिए मातृत्व अवकाश एवं समान वेतन का प्रावधान किया एवं साप्ताहिक अवकाश भी निर्धारित किए एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ, बीमा आदि कल्याणकारी योजनाओं का समर्थन किया वंचित वर्गों एवं महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान किया|

शिक्षक प्रशिक्षुओं के द्वारा दी गयी प्रतिक्रिया के अनुसार अधिकतम शिक्षक प्रशिक्षु डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचारों के कुछ पहलुओं से अनभिज्ञ हैं| शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा भारतीय मुद्रा से सम्बंधित विषय पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गयी हैं, जबकि उन्होंने भारतीय मुद्रा की समस्या के समाधान एवं मूल्यों की स्थिरता हेतु स्वर्ण प्रतिमान पर जोर दिया| डॉ. अम्बेडकर ने 1923 में Problem of Rupee:-Its Origin and Solution नामक पुस्तक में भारतीय मुद्रा प्रणाली की समस्या के विषय में विस्तृत रूप से चर्चा की है| छात्र-छात्राओं को डॉ. अम्बेडकर द्वारा आर्थिकी से

सम्बंधित लिखित पुस्तकों के विषय में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गयी| उनके द्वारा लिखित पुस्तक के आधार पर ही 1934 में भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना की गयी| भूमि सुधार के अन्तर्गत जमींदारी प्रथा के उन्मूलन में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, जबकि वह भारतीय कृषि से जमींदारी, रैयतवाड़ी प्रथा को समाप्त करना चाहते थे| शिक्षक प्रशिक्षुओं ने द्वारा जल नीति, बिजली और सिंचाई परियोजना के सन्दर्भ में भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गयी है, जबकि वह दामोदर घाटी, महानदी, सोन नदी, परियोजना को प्रस्तावित किया| उनका विचार था कि ये परियोजनाएं कमजोर वर्गों के लिए सशक्तिकरण का कार्य करेंगी|

**समीक्षा**

| क्र. स. | आर्थिकी क्षेत्र के आयाम | डॉ. भीम राव अम्बेडकर | चाणक्य |
|---|---|---|---|
| 1. | वित्तीय व्यवस्था का स्वरूप | लोकतांत्रिक, और समाजवादी | केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था, राजा का पूर्ण नियन्त्रण |
| 2. | औद्योगीकरण | औद्योगीकरण के समर्थक | राज्य के उद्योग एवं व्यापार को समृद्ध करना |
| 3. | कृषि एवं व्यापार | उन्नत कृषि के प्रति सुधारात्मक दृष्टिकोण | कृषि और व्यापार को प्राथमिकता |
| 4. | कर प्रणाली | आर्थिक स्थिति एवं क्षमता के अनुसार (कराधान क्षमता) | संतुलित प्रणाली |
| 5. | मुद्रा | मुद्रा की स्थिरता पर विशेष बल | धातु आधारित मुद्रा के मानकीकरण पर जोर दिया |
| 6. | श्रमिक नीति | श्रमिकों के अधिकारों एवं उनके सुधारों पर ध्यान | श्रमिकों के कल्याण एवं अधिकारों की रक्षा |
| 7. | भूमि सुधार | भूमि सुधार एवं जमींदारी प्रथा का उन्मूलन | कृषि में उत्पादकता बढ़ाने को अत्यधिक प्राथमिकता |
| 8. | स्त्रियों को आर्थिक अधिकार | महिला सशक्तिकरण के समर्थक | महिलाओं को सीमित अधिकार |

चाणक्य और डॉ, अम्बेडकर दोनों ही अपने समय के महान विचारक, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और राष्ट्र निर्माता थे| चाणक्य नीति" में वित्तीय प्रबंधन से सम्बंधित नीतियां एवं सूत्र भिन्न- भिन्न अध्यायों में समाहित हैं, किसी एक अध्याय में अर्थ व्यवस्था से सम्बंधित विस्तृत जानकारी नहीं मिलती हैं| अध्याय 2 में धन संचय एवं धन के महत्व को परिभाषित किया हैं, चार में धन के महत्व एवं उसके प्रबंधन के विषय में एवं अध्याय 6 में राजस्व और कर नीति के विषय में लिखा हैं| अध्याय 9 में धन संचय और उसकी सुरक्षा 12, में व्यापार और निवेश नीति के विषय में हैं| डॉ. भीम राव अम्बेडकर द्वारा लिखित शोधों एवं पुस्तकों में अर्थ व्यवस्था से सम्बंधित समस्याओं एवं उनके समाधान की विस्तृत रूपरेखा मिलती हैं|

राज्य की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक शासक के पास मजबूत वित्तीय स्थिति होनी चाहिए| चाणक्य के अर्थव्यवस्था का स्वरूप केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था पर आधारित था, जिसमें राजा का पूर्ण रूप नियंत्रण होता हैं| डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय अर्थव्यवस्था को समाजवादी एवं सामाजिक न्याय की दृष्टि से देखा उनका दृष्टिकोण लोकतांत्रिक संप्रत्यय पर आधारित था| उन्होंने कृषि भूमि और आवश्यक संसाधनों पर सरकार का नियंत्रण होना चाहिए के पक्षधर थे, शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा भी यही प्रतिक्रिया दी गयी हैं|

मौर्य कालीन अर्थव्यवस्था कृषि और व्यापार पर आधारित थी, चाणक्य ने कृषि को राज्य की का डॉ. भीम राव अम्बेडकर और चाणक्य दोनों ने ही कृषि को महत्ता प्रदान की और कृषि मजबूत करने हेतु कार्य किए| भारतीय

अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने हेतु डॉ. अम्बेडकर औद्योगीकरण के भी पक्षधर थे जो आर्थिक अर्थव्यवस्था के विकास के साथ रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगा|

चाणक्य की कर प्रणाली, संतुलित प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें सभी वर्गों पर उचित कर लगाया गया| उनकी यह प्रणाली राजस्व की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए बनाई गई थी उन्होंने कराधान को मधुमक्खी के शहद लेने के सिद्धांत से जोड़ा गया जिसमें राजा मधुमक्खी की तरह कर वसूले, जो फूल से रस तो लेती हैं, पर उसे नुकसान नहीं पहुँचाती है| डॉ. अम्बेडकर ने कराधान नीति के विषय में चिंतन किया और उनका मानना था कि कर व्यवस्था आर्थिक स्थिति एवं क्षमता के अनुसार लगाया जाना चाहिए इसके लिए उन्होंने "कराधान क्षमता" का प्रयोग किया| उन्होंने निष्पक्ष कर प्रणाली का समर्थन किया जिससे की समाज में आर्थिक संतुलन बना रहे| चाणक्य ने महिलाओं को परिवार का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ माना, उस समय महिलाओं को सीमित अधिकार प्राप्त थे उनका मानना था स्त्री धार्मिक एवं धन संचय करने वाली होनी चाहिए जो आर्थिक संकट में परिवार का सहयोग करें| डॉ. अम्बेडकर भी महिला सशक्तिकरण के समर्थक थे, उनका विचार था कि किसी भी समाज की उन्नति, वहां की महिलाओं की स्थिति से आंकी जानी चाहिए| शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा भी यह प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी है कि डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण के लिए जीवनपर्यंत कार्य किया| मौर्य काल में पंच मार्क सिक्कों का प्रचलन था| चाणक्य ने मुद्रा की धातु की पारदर्शिता एवं शुद्धता को गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाली सिक्के बनाने वालों को कठोर दंड दिया जाता था क्योंकि इसका प्रभाव राज्य की अर्थव्यवस्था पर पड़ता था इसीलिए टकसाल को राजा के नियन्त्रण में होना चाहिए| उन्होंने मुद्रा मूल्य की स्थिरता पर विशेष ध्यान दिया| डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि मुद्रा प्रबंधन का नियंत्रण सरकार एवं केन्द्रीय बैंक के पास होना चाहिए, परिणामस्वरूप 1935 में भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई| चाणक्य द्वारा जो नीति प्रस्तावित की गयी है, उन नीतियों का अनुसरण करके मानव, जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता हैं| यह नीतियां मानवीय जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में मनुष्य को सक्षम बनाती हैं| परन्तु डॉ. अम्बेडकर के विचार समसामयिक हैं, जो राष्ट्र की प्रगति के आधार बिंदु हैं|

**आधुनिक परिपेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं चाणक्य के आर्थिक कार्यों की प्रासंगिकता**

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं चाणक्य दोनों महान अर्थशास्त्री एवं आर्थिक विचारक हैं और आधुनिक समय में दोनों के विचार प्रासंगिक है | डॉ. अम्बेडकर ने आर्थिकी के क्षेत्र में अपने गहन विचार प्रस्तुत किए| वैश्विक स्तर पर सतत् विकास के आर्थिक आयाम में डॉ. अम्बेडकर के दूरदर्शी विचार, जिसमें समावेशी आर्थिक विकास गरीबी का पूर्णरूप से उन्मूलन एवं भुखमरी कम करना, अच्छा स्वास्थ्य और अच्छा जीवनस्तर, उत्तम कार्य एवं आर्थिक विकास में उनके विचारों की समावेशिता परिलक्षित होती हैं| जिसका उद्देश्य सभी वर्गों के लोगों को आर्थिक विकास की प्रक्रिया में समावेशित करना है| भारतीय समाज में प्राचीन नीतियों सिद्धांतों एवं तर्क के आधार पर वर्तमान परिस्थितियों की आधारशिला निर्धारित की जाती है| चाणक्य ने जिन आर्थिक विचारों का प्रतिपादन किया, आधुनिक युग में उनका महत्व आज भी है| उनकी कृषि सम्बन्धी विचार एवं नीतियाँ, कर नीति, उद्योग व्यापार सम्बन्धी विचारों का आज भी महत्व है|

**निष्कर्ष**

भारतीय ज्ञान प्रणाली, हमारे पारंपरिक ज्ञान को वर्तमान में विकसित करने का एक प्रयास है| चाणक्य की नीति जीवन को सफलतापूर्वक जीने के पहलुओं पर एवं अर्थव्यवस्था से सम्बंधित सूक्तियों पर आधारित है| जहाँ एक ओर "चाणक्य नीति" प्राचीन भारत की मजबूत आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करती है वहीं दूसरी ओर डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचार आधुनिक भारत की मजबूत नींव रखने में सहायक रहे है| अतः भारतीय पारम्परिक आर्थिक सिद्धांत वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य में सतत् लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं विकसित राष्ट्र की परिकल्पना को पूर्ण करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं| डॉ. भीम राव अम्बेडकर का आर्थिक दर्शन जीवन के प्रत्येक आयामों में न्याय, समानता

बंधुत्व एवं स्वतंत्रता को बढ़ाने वाले बिन्दुओं में केन्द्रित है, उनका आर्थिक दर्शन, तार्किकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा चहुँमुखी विकास को परिलक्षित करता है| उनके द्वारा दिए गए तथ्य राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्ता रखते हैं| वर्तमान परिस्थिति में व्यक्ति के जीवन का प्रत्येक आयाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उसकी आर्थिक स्थिति से प्रभावित हैं| डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक दर्शन एवं "चाणक्य नीति" के मूलभूत सिद्धांत आधुनिक समय में तर्किकता, के साथ समझते हुए व्यक्ति एवं राष्ट्र हेतु मजबूत स्तम्भ के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता हैं|

**सन्दर्भ सूची**

आसेरी, ई. (2016). डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक विचार एवं वर्तमान दौर में उनकी प्रासंगिकता, J*ournal of Emerging Technologies and Innovation Research (JETIR),* 2(9) Pp 545-548.

कीर, डी. (2022). *डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जीवन चरित*, आस्मिता मोहिते पाप्युलर प्रकाशन प्र0लि0 महालक्ष्मी चेम्बर्स भुलाभाई देसाई रोड मुंबई.

जैन आर. (2020). कौटिल्य के आर्थिक विचार–वर्तमान सन्दर्भ में, *Journal of Emerging Technologies and Innovation Research* (JETIR), 7(2), 443-445.

मौर्य, आर. & कुमार, के. (2019). *डॉ. भीम राव अम्बेडकर के सामाजिक-आर्थिक विचार.* 8(8), 1-11.

सिंह, पी. (2019), डॉ भीम राव अम्बेडकर की विचारधारा और भारत का उदय, International *Journal of Humanities and Social Science Invention* (IJHSSI), 8(4), 68-71.

सिंह, पी. (2023), कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता, *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)* 11(9) 41-47.

सिंह, एस और नागर, ए. के. (2023). डॉ. भीम राव अम्बेडकर के आर्थिक चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन, *International Journal of Research in Academic World,* 31-33.

https://www.drishtiias.com/hindi/to-the-points/paper4/chanakya-s-ideologies